[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3426

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

गुरू शिष्य परम्परा में सेंध लगाती दूरस्थ शिक्षा"

डॉ. संगीता शर्मा
सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग
शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कन्या, स्नातकोत्तर महाविद्यालय, इंदौर

प्रकृति अपने हजारों रंगों में हमारे सामने खुशियों का खजाना लाती हैं, किंतु संगीत के इस चटकीले रंग ने मानव मन और मस्तिष्क पर अपना जो असर छोड़ा हैं, वह कल्पना से परे है। संगीत गायन, वादन तथा नृत्य तीनों कलाओं का समन्वय रूप है। इन तीनों अंगों को अलग–अलग प्रस्तुत करना संगीत की सजीवता को नष्ट करना हैं। इन तीनों अंगों के समन्वित प्रदर्शन से ही व्यक्ति समस्त बाह्यय परिस्थितियों से कटकर आत्मकेन्द्रित हो जाता है।

संगीत विभिन्न ध्वनियों को समन्वित करने वाली वह कला है, जिसके द्वारा मनोभावों के प्रदर्शन में रोचकता, माधुर्य एवं सुन्दरता आती है। संगीत का संबंध स्वर तथा भावों से भी होता हैं। संगीत सृष्टि के कण–कण में विद्यमान हैं। संगीत असीमित, अछोर व अशेष है। विद्वानों ने संगीत को ईश्वर प्राप्ति का सबसे बड़ा साधन माना है। यह भी साबित कर दिया है कि संसार के सभी रास्तों में उलझाव है, भटकन है। व्यक्ति इनमें उलझ कर भटक जाता है, परंतु संगीत ही एक ऐसा माध्यम है, जो समस्त विचारों से मुक्त रखते हुए, मोक्ष के मार्ग तक पहुँचाता है।

मानव को मोक्ष तक पहुँचने के लिये संगीत साधना की आवश्यकता होती है। संगीत शिक्षा एक ऐसा सशक्त साधन है, जिसके माध्यम से हम निरन्तर अभ्यास करते हुए अपनी कला को चरमोत्कर्ष पर पहुँचाने में सक्षम होते है। यह शिक्षा गुरू–शिष्य परम्परा के द्वारा ही संभव है। प्राचीन काल से ही गुरू–शिष्य परम्परा विद्यमान रही है। आश्रम व्यवस्था के अंतर्गत वहीं पर रहकर शिक्षा ग्रहण करने की परम्परा थी। इसके अंतर्गत शिष्य, गुरू के सान्निध्य में रहकर अपनी सम्पूर्ण शिक्षा अर्जित करता था, वह गुरू के समक्ष स्वर साधना या संगीत साधना करता था। इस शिक्षा पद्धति में गुरू के द्वारा परम्परागत चीजे, सूक्ष्मता, शुद्धता, कला सौन्दर्य के माध्यम से हस्तान्तिरित की जाती थी। गुरू के सान्निध्य में शिक्षित होकर शिष्य पारंगत होते थे व संगीत की बारीकियों को सीखते थे। धीरे–धीरे आश्रम, संगीत के घरानों के रूप में सामने आये। संगीत के पुनरूत्थान की दृष्टि से घरानों ने संगीत विद्यालय का रूप ले लिया। घराने का तात्पर्य संगीत परिवार से था, जिसमे विशिष्ट शिक्षा से शिष्य का गठन किया जाता था। गुरू–शिष्य के संपर्क में एक घनिष्ठ संबंध होता था। दीर्घकाल तक गुरूओं के सान्निध्य में रहकर उनकी सेवा करके विद्या ली जाती थी।

संसार परिवर्तनशील है। संगीत के क्षेत्र में भी अनेक परिवर्तन हुए है। प्राचीन समय में संगीत का क्षेत्र सीमित था। संगीत के इच्छुक, गुरूओं के समक्ष ही संगीत की शिक्षा लेते थे, किंतु वर्तमान में संगीत शिक्षा विद्यालयों के अतिरिक्त शिक्षण संस्थानों में पाठ्यक्रम के विषय के रूप में भी दी जा रही है। वर्तमान युग इंटरनेट का युग है, जो विद्यालयों तथा पुस्तकों के अतिरिक्त ज्ञानवर्धन या शिक्षा प्राप्त करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इंटरनेट के माध्यम से दूरस्थ शिक्षा एक नवाचार के रूप में हमारे सामने उभर कर आयी है। यू.जी.सी. के कार्यक्रमों में कम्प्यूटर के माध्यम से दूरस्थ शिक्षा को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जा रही है। दूरस्थ शिक्षा पत्राचार प्रणाली के माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा है। दूरस्थ शिक्षा आमतौर पर एक परिसर में, पाठ्यक्रमों में भाग लेने से छात्र को रोकने की भौगोलिक, या शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच सान्निध्य एवं साहचर्य के अभाव को दर्शाती है। आज स्थानीय पुस्तकालयों के रूप में इंटरनेट का उपयोग कर घरों में बैठकर यह सुविधा उपलब्ध हो जाती है। दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से छात्रों को आसान तरीकों से योग्यता प्राप्त करने में मदद प्राप्त होती है। वर्तमान में इस शिक्षा का प्रसार–प्रचार जोर शोर से हो रहा है।

दूरस्थ शिक्षा वहाँ उपयोगी मानी जा रही है, जहाँ विद्यालय नहीं है, या उन लोगों के लिये उपयोगी है जो अधिक उम्र के है और शिक्षित होना चाहते है। अनेक विषयों में दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से पढ़ाई हो रही हैं। वर्तमान में इस शिक्षा ने अपने पैर बहुत दूर तक फैला लिये है।

परन्तु संगीत में दूरस्थ शिक्षा खतरनाक साबित होगी क्यों कि संगीत का संबंध गुरू के समक्ष बैठकर ज्ञान प्राप्त करने से ही होता है। विद्यार्थियों की समस्याओं का निराकरण तुरंत किया जाना चाहिये। गुरू के अभाव में उपयुक्त शिक्षा मिलना संभव नहीं होता है। विद्यार्थी निश्चित शैली को भी नहीं अपना पाते। दूरस्थ शिक्षा व्यापक छात्र समूह तक पहुँचने के लिये प्रभावी

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

नहीं है। इससे संगीत की सूक्ष्मता व जटिलता का आभास नहीं होता है। गुरू–शिष्य परम्परा में शिक्षा अनुशासन, परिश्रम व आदरभाव से चलती थी परंतु दूरस्थ शिक्षा में ये संभव नहीं है।

विद्यार्थी संगीत में पारंगत होना चाहते है तो इसके लिये उन्हें गुरू के सान्निध्य में अनुशासित और परिश्रम से धीरे–धीरे संयम से अभ्यास करना चाहिये। प्रारंभ में जब तक बोलो पर या स्वर पर अधिकार प्राप्त न हो जाये तब तक गुरू के समक्ष ही स्वराभ्यास किया जाना चाहिये क्योंकि स्वर साधना के समय गुरू स्वरों आदि की शुद्धि–अशुद्धि का ध्यान रखता है। गुरू के संपर्क के अभाव में यदि एक बार गलत अभ्यास शुरू हो गया तो उसे ठीक करना आसान नहीं होता है। ठीक उसी प्रकार जैसे कुम्हार जब घड़ा बनाता है, और वह यदि गलत बन जाता है तो उसे तोड़ कर ही दुबारा बनाना पड़ता हैं। कभी–कभी विद्यार्थी ऑनलाइन कार्यक्रमों के साथ काम करने में अपने आप को सहज महसूस नहीं करते हैं।

संगीत में गुरूमुखी शिक्षा अत्यन्त आवष्यक है। संगीत जैसे विषय में दूरस्थ शिक्षा लाभदायक प्रतीत नहीं होती है। गुरू के समक्ष जब तक शिक्षा न ली जाये, शिक्षा पूर्ण नहीं होती हैं। दूर से प्राप्त शिक्षा अधूरी सी प्रतीत होती हैं। यह सिर्फ एक उपाधि प्राप्त करने का आसान तरीका माना जा सकता है। कोई भी चीज दूर से देखने पर उतना आनंदित नहीं करती, जितना कि उसे पास से देखने पर प्रसन्नता प्राप्त होती है। अतः संगीत में दूरस्थ शिक्षा को अपनाना विषय के साथ खिलवाड़ जैसा प्रतीत होगा।

देह की थकावट का उपचार तो विभिन्न विधाओं द्वारा संभव हैं, परंतु मन की थकावट का उपचार केवल संगीत द्वारा संभव हो सकता है। संगीत मानव समाज की कलात्मक उपलब्धि और भावना की उत्कृष्ट कृति है। आत्मिक उल्लास और अनन्दानुभूतियों को साक्षात् व्यक्त करने का संगीत से बढ़कर अन्य कोई इतना सशक्त माध्यम नहीं है। साक्षात् अनुभूति दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से संभव नहीं हैं।

संदर्भ –

1 *कंठ संगीत में घराना व्यवस्था का विवर्त्तन – डॉ. राका मित्रा*
2 *संगीत – फरवरी 2007*
3 *संगीत शिक्षण परम्परा में एक परिवर्तन – डॉ. शर्मिला टेलर*